INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 3 | APRIL – 2026

दरभंगा शहर के तालाबों का घटता स्वरूप और वर्तमान संकट

तनुश्री भट्टाचार्या
एमए., पी. एच डी., भूगोल, गुरू घासी दास
युनिवर्सिटी, विलासपुर, छत्तीसगढ़

1. शोध सारांश (Abstract)

ऐतिहासिक रूप से 'तालाबों के शहर' के रूप में विख्यात दरभंगा (बिहार) वर्तमान में गंभीर पर्यावरणीय संकट से गुजर रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य दरभंगा शहर के प्रमुख तालाबों – विशेष रूप से हराही, दिग्घी और गंगासागर – के घटते भौगोलिक क्षेत्रफल, उनके पारिस्थितिक क्षरण और वर्तमान संकटों का गहन विश्लेषण करना है। यह शोध कार्य प्राथमिक और द्वितीयक डेटा पर आधारित है, जिसमें पुराने मानचित्रों की तुलना वर्तमान उपग्रह चित्रों (Google Earth) से की गई है और स्थानीय नागरिकों के साक्षात्कार के माध्यम से समस्या की गहराई को समझा गया है।

शोध के निष्कर्षों से पता चलता है कि अनियंत्रित शहरीकरण, जनसंख्या का बढ़ता दबाव और भू–माफियाओं द्वारा किए जा रहे अवैध अतिक्रमण ने इन जल निकायों के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। पिछले कुछ दशकों में कई छोटे तालाब पूरी तरह भर दिए गए हैं, जिससे शहर की प्राकृतिक ड्रेनेज प्रणाली ध्वस्त हो गई है। इसका सीधा परिणाम मानसून के दौरान 'शहरी बाढ़' (Urban Flooding) और ग्रीष्म ऋतु में तेजी से गिरते भू–जल स्तर के रूप में सामने आ रहा है। इसके अतिरिक्त, कचरा डंपिंग और सीवरेज का सीधा बहाव इन तालाबों के जैव–विविधता को नष्ट कर रहा है। शोध यह निष्कर्ष निकालता है कि यदि समय रहते कठोर नीतिगत कदम और सामुदायिक भागीदारी सुनिश्चित नहीं की गई, तो दरभंगा की यह अनमोल विरासत स्थायी रूप से समाप्त हो जाएगी।

मुख्य शब्द (Keywords): दरभंगा, तालाब, अतिक्रमण, शहरीकरण, जलभराव, भू–जल स्तर, पारिस्थितिकी।

2. परिचय (Introduction)

बिहार का मिथिलांचल क्षेत्र अपनी जल– संस्कृति के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है, और इस संस्कृति का केंद्र 'दरभंगा' रहा है। ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, दरभंगा को 'तालाबों का शहर' कहा जाता था। यहाँ के राजाओं और स्थानीय जमींदारों ने न केवल सौंदर्य के लिए, बल्कि जल प्रबंधन के एक दूरदर्शी दृष्टिकोण के साथ हजारों तालाबों का निर्माण करवाया था। मान्यता है कि कभी यहाँ ''पग–पग पोखर, माछ, मखान'' की कहावत चरितार्थ होती थी। ये तालाब शहर की प्यास बुझाने के साथ–साथ मत्स्य पालन और मखाना उत्पादन के मुख्य केंद्र थे।

भौगोलिक दृष्टि से दरभंगा एक निम्न– मैदानी इलाका (Low–lying plain) है। यहाँ के तालाब 'Liat' (Sponge) की तरह कार्य करते थे। वर्षा ऋतु में जब बागमती और कमला जैसी नदियों का जल स्तर बढ़ता था, तब ये तालाब अतिरिक्त जल को सोखकर शहर को बाढ़ से बचाते थे। साथ ही, ये सालों भर भू–जल स्तर (Groundwater table) को बनाए रखने में प्राकृतिक 'रिचार्ज शाफ्ट' का काम करते थे। यहाँ की जैव– विविधता, विशेषकर जलीय पक्षी और वनस्पतियां, इन्ही तालाबों पर निर्भर रही हैं।

3. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

दरभंगा के तालाबों और उनके पारिस्थितिक संकट पर कई महत्वपूर्ण अध्ययन किए गए हैं, जिन्हें मुख्य रूप से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :

ऐतिहासिक एवं आधिकारिक साक्ष्यः डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1964) के आधिकारिक सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार, 1960 के दशक तक दरभंगा शहर में 350 से अधिक तालाब मौजूद थे। यह इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि शहर का मूल स्वरूप जल– निकायों पर आधारित था।

तालाबों की घटती संख्या पर प्रमुख शोध : डॉ. एस. एच. बजमी (1989–90), मिल्लत कॉलेज, दरभंगा के अनुसार, 1989 तक तालाबों की संख्या घटकर 213 रह गई थी। यह शोध स्पष्ट करता है कि 1990 के दशक के पूर्व ही अतिक्रमण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। नारायण जी चौधरी ने 'तालाब बचाओ अभियान' (TBA) के माध्यम से तालाबों के भौतिक अतिक्रमण को साक्ष्य के साथ प्रस्तुत किया है। वैद्यनाथ झा के अनुसार, तालाबों का गायब होना यहाँ की पारंपरिक अर्थव्यवस्था (मछली और मखाना) के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

पारिस्थितिक एवं प्रदूषण संबंधी अध्ययनरू हाल शोध पत्रों (जैसे – Research Gate, 2021) ने हराही और दिग्घी तालाबों के पानी की गुणवत्ता का अध्ययन किया है। यह पाया गया है कि इन तालाबों में सीवरेज का सीधा बहाव होने के कारण 'बायोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड' (BOD) खतरनाक स्तर पर पहुँच गई है। Science Direct (2024) की रिपोर्ट्स बताती हैं कि सैटेलाइट डेटा के उपयोग से यह सिद्ध हुआ है कि दरभंगा का 'बिल्ट–अप एरिया' (निर्माण क्षेत्र) तेजी से बढ़ा है, जिसके कारण वेटलैंड्स का क्षेत्रफल संकुचित हुआ है।

4. परिकल्पना (Hypothesis)

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित तीन प्रमुख अनुमानों पर आधारित हैः

(i) अतिक्रमण और शहरीकरणः दरभंगा में बढ़ते निर्माण कार्यों और भूमि की कमी के कारण तालाबों के क्षेत्रफल में निरंतर गिरावट आ रही है।

(ii) जलभराव का संकटः तालाबों और उनके प्राकृतिक निकास द्वारों (Outlets) के बंद होने से शहर में भीषण जलभराव (Waterlogging) की समस्या उत्पन्न हुई है।

(iii) पारिस्थितिक क्षरणः सीवरेज और कचरे के सीधे बहाव के कारण तालाबों की जैव–विविधता समाप्त हो रही है और भू–जल (Groundwater) प्रदूषित हो रहा है।

5. शोध पद्धति (Research Methodology)

इस शोध में डेटा एकत्र करने के लिए निम्नलिखित विधियों का उपयोग किया गया है :

अध्ययन क्षेत्रः शोध के लिए दरभंगा शहर के तीन प्रमुख तालाबों – हराही, दिग्घी और गंगासागर को चुना गया है।

प्राथमिक डेटा (Primary Data): तालाबों का प्रत्यक्ष अवलोकन (Field Visit) किया गया और स्थानीय निवासियों व मछुआरों (50 व्यक्ति) से साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी जुटाई गई।

द्वितीयक डेटा (Secondary Data) : ऐतिहासिक जानकारी के लिए 'जिला गजेटियर' और वर्तमान स्थिति के लिए 'गूगल अर्थ' (Google Earth) के उपग्रह चित्रों (2014–2024) का विश्लेषण किया गया है।

विश्लेषण तकनीकरू तालाबों के पुराने और नए नक्शों की तुलना करके उनके घटते क्षेत्रफल का आकलन किया गया है।

6. डाटा विश्लेषण (Data Analysis)

एकत्रित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण निम्नलिखित प्रमुख आधारों पर किया गया है :

संख्यात्मक गिरावटः जहाँ 1960 के दशक में शहर में 350 से अधिक तालाब दर्ज थे, वहीं 1989 में यह संख्या 213 रह गई वर्तमान सर्वेक्षण (2024–2026) के अनुसार, केवल 83–84 तालाब ही अपने अस्तित्व को बचा पाए हैं यह पिछले 60 वर्षों में लगभग 76% की गिरावट दर्शाता है।

अतिक्रमण के स्वरूप का वर्गीकरणः तालाबों के गायब होने के मुख्य कारणों में आवासीय निर्माण (45%), व्यावसायिक गतिविधियाँ (25%), सरकारी/संस्थानिक निर्माण (15%), और कूड़ा डंपिंग (15%) पाया गया है।

जल गुणवत्ता और पारिस्थितिक प्रभावः 95% (तालाबों में घरेलू सीवरेज नालियों) का पानी सीधे गिर रहा है। जलकुंभी के अत्यधिक विस्तार के कारण देशी मछलियों की प्रजातियों की उपलब्धता में 60% तक की कमी आई है। तालाबों के पास रहने वाले 80% उत्तरदाताओं ने बताया कि पिछले 10 वर्षों में उनके चापाकलों का जल स्तर 15–20 फीट की गिरावट दर्ज कर चुका है।

शहरी जलभराव से संबंधः जिन वार्डों में तालाबों को पूरी तरह भर दिया गया है, वहां बारिश के दौरान जलभराव की अवधि 3 से 4 दिन तक रहती है।

दरभंगा शहर में तालाबों की संख्या का ऐतिहासिक रुझान (चार्ट डेटा)

समय/वर्ष	तालाबों की संख्या (लगभग)	स्रोत/आधार
1960 के दशक में	350+	जिला गजेटियर (District Gazetteer)
1989–90 में	213	डॉ. एस. एच. बजमी का शोध
2010 के बाद	100 से कम	नगर निगम और स्थानीय निकायों के रिकॉर्ड
2024–2026 में	83–84	सैटेलाइट डेटा और सरकारी सर्वेक्षण

7. डिस्कशन (Discussion)

दरभंगा के तालाबों का संकट केवल एक भौगोलिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक सुनियोजित 'पर्यावरणीय विनाश' की ओर इशारा करता है। शहर के मास्टर प्लान में तालाबों को एक 'सक्रिय जल निकाय' के रूप में नहीं, बल्कि 'रिक्त स्थान' के रूप में देखा गया। जब तालाबों को भरा गया, तो शहर का प्राकृतिक ढलान (Natural Slope) बाधित हो गया, जिससे जल निकासी तंत्र पूरी तरह विफल है।

प्रशासनिक स्तर पर हराही और दिग्घी जैसे तालाबों के 'सुंदरीकरण' की चर्चा अक्सर होती है लेकिन इस दौरान सुंदरीकरण के नाम पर तालाबों के चारों ओर कंक्रीट की दीवारें बना दी गई हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह हानिकारक है क्योंकि कंक्रीट जल को भूमि के भीतर रिसने (Percolation) से रोकता है। इसके अलावा, मखाना और मछली पालन दरभंगा की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं। तालाबों के घटने और उनके जहरीले होने से स्थानीय मल्लाह समुदाय की आजीविका पर सीधा प्रहार हुआ है और पलायन बढ़ा है। न्यायालयों (SC/NGT) के सख्त आदेशों के बावजूद स्थानीय स्तर पर अतिक्रमण का जारी रहना प्रशासनिक इच्छाशक्ति की कमी को दर्शाता है।

8. निष्कर्ष (Conclusion)

दरभंगा के तालाबों का अस्तित्व बचाना केवल सांस्कृतिक धरोहर बचाने के लिए ही नहीं, बल्कि शहर को पर्यावरणीय आपदा से बचाने के लिए भी अनिवार्य है। यद्यपि राज्य सरकार 'जल – जीवन – हरियाली' मिशन (जिसका ₹12,568.97 करोड़ के बजट के साथ विस्तार किया गया है) के तहत सार्वजनिक तालाबों का जीर्णोद्धार कर रही है, लेकिन दरभंगा के शहरी तालाबों में सीवेज डिस्चार्ज और भू–माफियाओं का अतिक्रमण अभी भी एक बड़ी चुनौती बना हुआ है सरकार ने जून 2026 तक दरभंगा सहित छह शहरों के सीवेज ट्रीटमेंट

प्लांट (STP) को पूरा करने का लक्ष्य रखा है। यदि समय रहते तालाबों का वास्तविक सीमांकन (Demarcation) नहीं किया गया और इन नीतियों का सख्ती से पालन नहीं हुआ, तो भविष्य में पेयजल संकट और बाढ़ की स्थिति और भयावह होगी।

9. सन्दर्भ सूची (References)

1. बिहार सरकार. (2025). जल – जीवन – हरियाली अभियान विस्तार (2022–2025): वार्षिक प्रगति रिपोर्ट. ग्रामीण विकास विभाग, बिहार।
2. बिहार शहरी आधारभूत संरचना विकास निगम लिमिटेड (BUIDCO), (2026)। बिहार के छह प्रमुख शहरों में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP) की प्रगति रिपोर्ट – जून 2026 समयसीमा।
3. केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड (CGWB), (2024)। बिहार राज्य के गतिशील भूजल संसाधन (Dynamic Ground Water Resources of Bihar, 2024)। जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार।
4. बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (1964), दरभंगा जिला गजेटियर (पुनर्मुद्रित संस्करण)। बिहार सरकार।
5. नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT), (2024, नवंबर), M.A. No. 18/2024/EZ बनाम बिहार सरकार (हराही, दिग्घी और गंगासागर तालाब संरक्षण मामला), पूर्वी क्षेत्र बेंच, कोलकाता।
6. बजमी, एस. (1989), दरभंगा शहर के तालाबों का पारिस्थितिक अध्ययन (Ecological Study of Ponds of Darbhanga Town). मिल्लत कॉलेज, दरभंगा।
7. गूगल अर्थ प्रो (Google Earth Pro). (2014–2026). दरभंगा शहर के जल निकायों का ऐतिहासिक सैटेलाइट इमेजरी डेटा।